कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता

जनकादयः ।

लोकसंग्रहमेवापि

संपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥२०॥

कर्मणा – कर्म से; एव – ही; हि – निश्चय ही; संसिद्धिम् – पूर्णता में; आस्थिताः – स्थित; जनक-आदयः – जनक तथा अन्य राजा; लोक-सङ्ग्रहम् – सामान्य लोग; एव अपि – भी; सम्पश्यन् –

विचार करते हुए; कर्तुम् – करने के लिए; अर्हसि – योग्य हो |

Text

जनक जैसे राजाओं ने केवल नियत कर्मों को करने से ही सिद्धि प्राप्त की | अतः सामान्य जनों को शिक्षित करने की दृष्टि से तुम्हें कर्म करना चाहिए |

गीता भूषण टीका

इस श्लोक में भगवान् कर्तव्य पूरक कर्म करने के सदाचार का प्रमाण देते हैं |

अपने नियत कर्मों को करने के द्वारा राजा जनक और अन्यों ने आत्म दर्शन की सिद्धि को प्राप्त किया था | एव शब्द का प्रयोग कर्मों की विशेषता को सूचित करने के लिए किया गया है न की केवल के अर्थ में

इसलिए नियत कर्मों को करने के साथ साथ श्रवण और अन्य भक्ति के अंगों के अनुशीलन को नहीं करना है ऐसा नहीं है अर्थात नियत कर्मों के साथ साथ भक्ति की श्रवण इत्यादि अंगों का भी अनुशीलन करना होता है |

“ परन्तु आपने कहा की जब एक सनिष्ठ भक्त आत्म का साक्षात्कार प्राप्त कर लेता है तो उसे आत्मा का अनुभव प्राप्त करने के लिए कोई कर्म

नहीं करने होते हैं | तो आप मुझे नियत कर्म करने की आज्ञा क्यों दे रहे हैं जब की मैं आत्मा और परमात्मा का दर्शन करने में स्थित हूँ क्योंकि मैं एक परिनिष्ठ भक्त हूँ ?”

“ यह सत्य है की आप एक परिनिष्ट भक्त हैं परन्तु सामान्य लोगों को शिक्षा देने के लिए मैं आप को आज्ञा दे रहा हूँ की आप कर्म करें | यदि मैं और अर्जुन दोनों ही नियत कर्मों को करते हैं तो तो अन्य लोग भी अपने

नियत कर्मों को करेंगे | यदि मैंने नियत कर्मों को नहीं किया तो अज्ञ लोग मेरा उदाहरण लेकर अपने कर्मों को त्यागने के कारण पतित हो जायेंगे | लोगों की रक्षा इन कर्मों को करने का प्रयोजन है |"

Purport

जनक जैसे राजा स्वरुपसिद्ध व्यक्ति थे, अतः वे वेदानुमोदित कर्म करने के लिए बाध्य न थे | तो भी वे लोग सामान्यजनों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत

करने के उद्देश्य से सारे नियत कर्म करते रहे | जनक सीताजी के पिता तथा भगवान् श्रीराम के ससुर थे | भगवान् के महान भक्त होने के कारण उनकी स्थिति दिव्य थी, किन्तु चूँकि वे मिथिला (जो भारत के बिहार प्रान्त में एक परगना है) के राजा थे, अतः उन्हें अपनी प्रजा को यह शिक्षा देनी थी कि कर्तव्य-पालन किस प्रकार किया जाता है | भगवान् कृष्ण तथा उनके शाश्वत सखा अर्जुन को

कुरुक्षेत्र के युद्ध में लड़ने की कोई आवश्यकता नहीं थी, किन्तु उन्होंने जनता को यह सिखाने के लिए युद्ध किया कि जब सत्परामर्श असफल हो जाते हैं तो ऐसी स्थिति में हिंसा आवश्यक हो जाती है | कुरुक्षेत्र युद्ध से पूर्व युद्ध-निवारण के लिए भगवान् तक ने सारे प्रयास किये, किन्तु दूसरा पक्ष लड़ने पर तुला था | अतः ऐसे सद्धर्म के लिए युद्ध करना आवश्यक थे | यद्यपि कृष्णभावनाभावित व्यक्ति

को संसार में कोई रूचि हो सकती तो भी वह जनता को यह सिखाने के लिए कि किस तरह रहना और कार्य करना चाहिए, कर्म करता रहता है | कृष्णभावनामृत में अनुभवी व्यक्ति इस तरह कार्य करते हैं कि अन्य लोग उनका अनुसरण कर सकें और इसकी व्याख्या अगले श्लोक में की गई है |

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः
स यत्प्रमाणं कुरुते
लोकस्तदनुवर्तते ॥२१॥

यत् यत् – जो-जो; आचरति – करता है; श्रेष्ठः – आदरणीय नेता; तत् – वही; तत् – तथा केवल वही; एव – निश्चय ही; इतरः – सामान्य; जनः – व्यक्ति; सः – वह; यत् – जो कुछ; प्रमाणम् – उदाहरण, आदर्श; कुरुते – करता है; लोकः – सारा संसार; तत्–

उसके; अनुवर्तते – पदचिन्हों का अनुसरण करता है |

Text

महापुरुष जो जो आचरण करता है, सामान्य व्यक्ति उसी का अनुसरण करते हैं | वह अपने अनुसरणीय कार्यों से जो आदर्श प्रस्तुत करता है, सम्पूर्ण विश्व उसका अनुसरण करता है |

गीता भूषण टीका

यह श्लोक सामान्य जनता को शिक्षा देने की पद्दति को दिखाता है | जैसे कर्म एक महानतम व्यक्ति करता है वैसा ही एक कनिष्ट व्यक्ति भी अनुसरण करता ही | जिन शास्त्रों अर्थात प्रमाण को महान व्यक्ति अपने कर्मों के समपादन के लिए उपयोग करता है वैसा ही कनिष्ट व्यक्ति भी करते हैं |

अर्थ यह है की अपना कल्याण चाहने वाले कनिष्ट व्यक्ति को शास्त्र अनुमोदित सर्व श्रेष्ट कर्मों को करना चाहिए |

साथ ही मन माने किये गए कर्मों को को अस्वीकार कर दिया गया है यदयपि वह श्रेष्ठ और शक्तिशाली व्यक्ति के द्वारा भी क्यों न किये जाएँ क्योंकि वह शास्त्र अनुमोदित नहीं होते |

Purport

सामान्य लोगों को सदैव एक ऐसे नेता की आवश्यकता होती है, जो व्यावहारिक आचरण द्वारा जनता को शिक्षा दे सके | यदि नेता स्वयं धूम्रपान करता है तो वह जनता को धूम्रपान बंद करने की शिक्षा नहीं दे सकता | चैतन्य महाप्रभु ने कहा है कि शिक्षा देने से पूर्व शिक्षक को ठीक-ठीक आचरण करना चाहिए | जो इस प्रकार शिक्षा देता है वह आचार्य या

आदर्श शिक्षक कहलाता है | अतः शिक्षक को चाहिए की सामान्यजन को शिक्षा देने के लिए स्वयं शास्त्रीय सिद्धान्तों का पालन करे | कोई भी शिक्षक प्राचीन प्रमाणिक ग्रंथों के नियमों के विपरीत कोई नियम नहीं बना सकता | मनु-संहिता जैसे प्रामाणिक ग्रंथ मानव समाज के लिए अनुसरणीय आदर्श ग्रंथ हैं, अतः नेता को उपदेश ऐसे आदर्श शास्त्रों के नियमों पर आधारित होना चाहिए |

जो व्यक्ति अपनी उन्नति चाहता है उसे महान शिक्षकों द्वारा अभ्यास किये जाने वाले आदर्श नियमों का पालन करना चाहिए | श्रीमद्भागवत भी इसकी पुष्टि करता है कि मनुष्य को महान भक्तों के पदचिन्हों का अनुसरण करना चाहिए और आध्यात्मिक बोध के पथ में प्रगति का यही साधन है | चाहे राजा हो या राज्य का प्रशासनाधिकारी, चाहे पिता हो या शिक्षक-ये सब अबोध

जनता के स्वाभाविक नेता माने जाते हैं | इन सबका अपने आश्रितों के प्रति महान उत्तरदायित्व रहता है, अतः इन्हें नैतिक तथा आध्यात्मिक संहिता सम्बन्धी आदर्श ग्रंथों से सुपरिचित होना चाहिए |